

महामारी या जैविक आपदा

प्रस्तावना- जब किसी रोग का प्रकोप कुछ समय पहले की अपेक्षा बहुत अधिक होता तो उसे 'महामारी' कहते हैं। महामारी किसी एक स्थान पर सीमित होती है। किन्तु यदि यह दूसरे देशों और दूसरे महाद्वीपों में भी पसर जाए तो उसे 'सार्वदेशिक रोग' (pandemic) कहते हैं। महामारी का मुख्य कारण जीवाणु (Bacteria) अथवा विषाणु (Virus) होते हैं। महामारियों से उत्पन्न होने वाली आपदा को जैविक आपदा कहते हैं। यह बहुत ही नुकसान दायक रहता है क्योंकि जैविक आपदा किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता है। जैविक आपदाएं जैव मूल की प्रक्रिया अथवा घटना के कारण घटित होती हैं अथवा जैविक सदिश (बिओलॉजिकल वेक्टर्स) की वजह से होती हैं जिसमें रोगजनक सूक्ष्मजीव, जीव विष (टॉक्सिन्स) तथा जैव सक्रिय (बायो एक्टिव) पदार्थ शामिल हैं जिनके कारण जान की हानि, चोट, बीमारी अथवा स्वास्थ्य पर अन्य असर, सम्पत्ति को नुकसान, आजीविका तथा सेवाओं को हानि, सामाजिक तथा आर्थिक विघटन अथवा पर्यावरण को नुकसान हो सकता है। जैविक आपदाओं के उदाहरणों में महामारी का फैलना, जंतुओं एवं जानवर के संक्रामक रोग, कीड़े अथवा अन्य जानवरों से फैला प्लेग अथवा जंतुबाधा (इनफैस्टेशन) शामिल हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित किया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है, लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है। ऐसे आज के दौर में इसी कोरोना वाइरस के कारण लोग महामारी व इनके प्रभाव को समझ पाये हैं, क्योंकि इस कोरोना वाइरस के कारण आज पूरी दुनिया स्तम्भ हैं, सभी देशों में आर्थिक-राजनैतिक गतिविधिया थम गयी हैं। पर दुनियाँ में कोरोना ही एक महामारी नहीं रहा है, समय-समय पर महामारी ने मानव समाज को अपने चपेट में लिया है तथा मानव समाज ने भी हर बीमारी का सामना कर महामारी को पराजित किया है। जिस संदर्भ में विस्तृत जानकारी निम्न हैं-

1. रिकॉर्डेड पेंडेमिक: एथेंस पर 430 ईसा पूर्व - सबसे पहले दर्ज की गई महामारी पेलोपोनेसियन युद्ध के दौरान हुई थी। जब लीबिया, इथियोपिया और मिस्र को पार कर स्पार्टन्स ने एथेनियन दीवारों को पार किया। इस दौरान एथेंस में दो-तिहाई लोगों की मौत हो गई। इस महामारी के लक्षणों में बुखार, प्यास, खूनी गले और जीभ, लाल त्वचा और घाव शामिल थे। टाइफाइड

बुखार के कारण होने वाली इस बीमारी ने एथेनियंस को काफी कमजोर कर दिया और स्पार्टन्स द्वारा उनकी हार का एक महत्वपूर्ण कारक था।

2. जस्टिनियन प्लेग - जस्टिनियन प्लेग (541–542 ई., 750 तक पुनरावृत्ति के साथ) एक महामारी थी जिसने बीजान्टिन (पूर्वी रोमन) साम्राज्य और विशेष रूप से इसकी राजधानी, कॉन्स्टेंटिनोपल, साथ ही सासैनियन साम्राज्य और पूरे भूमध्य सागर के आसपास के बंदरगाह शहरों को पीड़ित किया था। व्यापारी जहाजों में चूहों से प्लेग का संक्रमण हुआ था। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जस्टिनियन का प्लेग इतिहास में सबसे घातक महामारियों में से एक था, जिसके परिणामस्वरूप पुनरावृत्ति के दो शताब्दियों के दौरान अनुमानित 25–100 मिलियन लोगों की मृत्यु हुई, उस समय यूरोप की आधी आबादी के बराबर थी। प्लेग का नाम तत्कालीन बीजान्टिन सम्राट जस्टिनियन के नाम पर रखा गया था।

2013 में, शोधकर्ताओं ने पहले की अटकलों की पुष्टि की कि प्लेग ऑफ जस्टिनियन का कारण येरसिनिया पेस्टिस था, वही जीवाणु ब्लैक डेथ (1347-1351) के लिए जिम्मेदार था। उत्तरार्द्ध इसका प्रभाव बहुत कम था, लेकिन फिर भी एक-तिहाई यूरोपीय लोगों की एक-तिहाई की मौत हो गई। ग्रामीण इलाकों में प्लेग के परिणामस्वरूप, किसान फसलों की देखभाल नहीं कर सके और कॉन्स्टेंटिनोपल में अनाज की कीमत बढ़ गई। जस्टिनियन ने कार्थेज के क्षेत्र में वैंडल्स और इटली में ओस्ट्रोगोथ्स राज्य के खिलाफ युद्ध के लिए भारी मात्रा में धन खर्च किया था। उन्होंने हागिया सोफिया जैसे महान चर्चों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण धन समर्पित किया था। जैसा कि साम्राज्य ने परियोजनाओं को वित्तपोषित करने का प्रयास किया, परन्तु प्लेग भारी मात्रा में मौतों और कृषि और व्यापार के विघटन के माध्यम से कर राजस्व में गिरावट का कारण बना। जस्टिनियन ने पीड़ितों के मरने के परिणामस्वरूप विरासत में प्राप्त होने वाले सूट की चमक के साथ अधिक कुशलता से निपटने के लिए तेजी से नया कानून बनाया। प्लेग ने कॉन्स्टेंटिनोपल को उस समय प्रभावित किया जब बीजान्टिन साम्राज्य जस्टिनियन के शासन के तहत अपनी शक्ति के शिखर पर था। साम्राज्य ने इटली, रोम और उत्तरी अफ्रीका सहित ऐतिहासिक रूप से रोमन भूमध्यसागरीय तट को जीत लिया था। प्लेग अलग-अलग लहरों में वापस आया, अंत में साम्राज्य को कमजोर करने के बाद, 750 ईस्वी में समाप्त हो गया। बीजान्टिन सेना बीमारी के प्रसार के कारण नए सैनिकों की भर्ती करने और युद्ध के मैदान में सैन्य आपूर्ति सुनिश्चित करने में

विफल रही, तब उनके प्रांत हमले में आ गए। जब प्लेग गायब हुआ, तब तक साम्राज्य यूरोप में जर्मन-भाषी फ्रैंक्स और अरबों से मिस्र और सीरिया तक के क्षेत्रों को खो चुका था।

3. ब्लैक डेथ :- ब्लैक डेथ बुबोनिक प्लेग की विनाशकारी वैश्विक महामारी थी जिसने मध्य -13 के दशक में यूरोप और एशिया को दहला दिया था। अक्टूबर 1347 में प्लेग यूरोप में आया, जब काला सागर से 12 जहाज मेसिना के सिसिली बंदरगाह पर डॉक किए गए। जहाजों में सवार अधिकांश नाविक मृत थे, और जो अभी भी जीवित थे वे गंभीर रूप से बीमार थे और काले फोड़े में ढंके हुए थे जो रक्त और मवाद को बहाते थे। सिसिलियन अधिकारियों ने जल्दबाजी में "मौत के जहाजों" के बेड़े को बंदरगाह से बाहर करने का आदेश दिया, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी, अगले पांच वर्षों में, ब्लैक डेथ यूरोप में 20 मिलियन से अधिक लोगों की मृत्यु का कारण बनी - जो महाद्वीप की आबादी का लगभग एक तिहाई है। स्टैनफोर्ड के इतिहासकार वाल्टर शेहेल्ड के शब्दों में, महामारी असमता के "चार घुड़सवारों" में एक है, अन्य तीन युद्ध, क्रांतियां और राज्य की विफलताएं हैं। ब्लैक डेथ से सफ़ाई और खेतिहर मजदूरों के लिए मजदूरी में सुधार हुआ। श्रम के सापेक्ष भूमि अधिक प्रचुर हो गई [लाखों मेहनतकशों की मृत्यु के बाद]। यूरोप के कुछ हिस्सों में, श्रम की मांग बढ़ने पर मजदूरी तिगुनी हो गई। ब्लैक डेथ का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव शायद कैथोलिक चर्च का कमजोर होना था। चर्च किसी भी अन्य संस्था की तरह असहाय था क्योंकि प्लेग पूरे महाद्वीप में जंगल की आग की तरह फैलता था, और इसने चर्च और पादरी में लोगों के विश्वास को हिला दिया। जबकि चर्च एक शक्तिशाली संस्थान के रूप में बना रहेगा, यह प्लेग के प्रकोप से पहले कोई कभी भी उस शक्ति और प्रभाव को शकित नहीं कर सका था, जिसका चर्च ने उपभोग किया था। 16 वीं शताब्दी में प्रोटेस्टेंट सुधार चर्च को और कमजोर कर यूरोप में पुनर्जागरण का द्योतक सिद्ध हुआ।

4. स्पैनिश फ्लू - स्पैनिश फ्लू, जिसे 1918 फ्लू महामारी के रूप में भी जाना जाता है, एक असामान्य रूप से घातक इन्फ्लूएंजा महामारी था। जनवरी 1918 से दिसंबर 1920 तक चली, इसने 500 मिलियन लोगों को संक्रमित किया जो उस समय दुनिया की आबादी का एक चौथाई था। मरने वालों का अनुमान 17 मिलियन से 50 मिलियन तक कहीं भी है, यह मानव इतिहास में सबसे घातक महामारियों में से एक है। प्रथम विश्व युद्ध के अंतिम चरण के दौरान स्पैनिश फ्लू, प्रकोप का एक बड़ा प्रभाव युद्ध के परिणाम पर था। मनोबल बनाए रखने के लिए, प्रथम विश्व युद्ध के सेंसर ने जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका में बीमारी और मृत्यु दर

की शुरुआती रिपोर्टों को कम से कम किया। समाचार पत्र तटस्थ स्पेन में महामारी के प्रभावों की रिपोर्ट करने के लिए स्वतंत्र थे, जैसे कि किंग अल्फोंसो XIII की गंभीर बीमारी, और इन कहानियों ने विशेष रूप से हार्ड हिट के रूप में स्पेन की झूठी छाप बनाई। इसने स्पेनिश फ्लू नाम को जन्म दिया। हालांकि दोनों तरफ से फ्लू हुआ, जर्मनों और ऑस्ट्रियाई लोग इतनी बुरी तरह से प्रभावित हुए कि प्रकोप ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया। जर्मन जनरल एरिच लुडेन्डॉर्फ ने अपने संस्मरण में लिखा है कि जर्मनी की हार का एक कारण फ्लू था। जर्मनी ने मार्च 1918 में पश्चिमी मोर्चे पर अपना स्प्रिंग आक्रामक शुरू किया। जून और जुलाई तक, बीमारी ने जर्मन इकाइयों को कमजोर कर दिया था। 11 नवंबर, 1918 को हस्ताक्षर किए गए युद्धविराम ने युद्ध को समाप्त कर दिया। लेकिन फ्लू कई और महीनों तक दुनिया के कुछ हिस्सों को प्रभावित करता रहा।

5. कोविड -19 - COVID-19 के लिए अभी यह नहीं कहा जा सकता की यह विश्व को कैसे प्रभावित करेगा। परन्तु इस प्रकोप ने लोकतांत्रिक और तानाशाही दोनों देशों को देखा है, जो लोगों के आवागमन पर कठोर प्रतिबंध लगा रहा है। पश्चिमी दुनिया इस महामारी के केंद्र में है। इसने विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की प्रासंगिकता पर एक प्रश्न चिह्नित किया है। यह वैश्वीकरण के सिद्धांतों को वापस लेने का कारण हो सकता है। यह विश्व राजनीति में प्रमुख शक्ति परिवर्तन भी उत्पन्न कर सकता है, यह सम्पूर्ण विश्व में एक नकारात्मक आर्थिक प्रभाव उत्पन्न कर रहा है।

रोग का वितरण: - विशेषतः संक्रमण की सानुकूलता के अनुसार होता है। जल के समीप रहनेवालों में मलेरिया, जनसंकुल वातावरण में काम करनेवालों में वायुसंचारित श्वासरोग और अस्वच्छ स्थान में रहनेवालों में दूषित भोजन द्वारा प्रसारित रोग अधिक होते हैं। मनुष्य की उम्र का भी रोग के वितरण पर प्रभाव पड़ता है। जिस जीवाणु की संक्रामक शक्ति अधिक होती है और उससे उत्पन्न प्रतिरक्षा स्थायी होती है वह प्रायः बालरोग उत्पन्न करता है। बाल्यकाल में प्राप्त रोगजन्य प्रतिरक्षा उस रोग को युवावस्था में पुनः नहीं होने देती, इस कारण वह रोग मुख्यतः बालरोग ही बना रहता है। प्रायः सभी बालरोगों से वयस्क इसी कारण बचे रहते हैं। व्यावसायिक रोग प्रतिकूल और अस्वस्थ वातावरण में कार्य करने वाले श्रमिकों को होते हैं। स्त्रियों की प्रतिरोध शक्ति प्रसवकाल में बहुत घट जाती है और तब क्षय तथा अन्य संक्रमण, जो पहले प्रभावहीन अथवा निर्बल थे, प्रबल हो जाते हैं। इसी प्रकार

अन्य अनेक रोगों की जनता में आवृत्ति तथा वितरण का अध्ययन महामारी विज्ञान द्वारा किया जाता है। प्रत्येक रोग की व्यापकता संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिये महामारी संबंधी सर्वेक्षण किया जाता है, जिसके द्वारा स्वस्थ जनता, रोगी तथा वातावरण की अनुकूल, प्रतिकूल स्थितियों का वैज्ञानिक विवेचन और अध्ययन किया जाता है। रोगनिरोधक उपायों का ज्ञान चिकित्साशास्त्र के अध्ययन से प्राप्त हो सकता है परंतु केवल रोगों के लक्षण, निदान, चिकित्सा आदि का ज्ञान रोगनिरोध के लिये अपर्याप्त है। विभिन्न रोगों पर सफल आक्रमण करने के लिये चिकित्साशास्त्री केवल एक सैनिक मात्र है और महामारीवेत्ता अनुभवी और कुशल सेनापति, जो अपने तथा शत्रु के बलाबल का विचार कर अपने सीमित साधनों से अपनी रक्षापंक्ति सुदृढ़ करता हुआ शत्रु की निर्बल अवस्था का पता लगाकर अपनी अल्पतम हानि और अधिकतम लाभ के उद्देश्य से उपयुक्त अवसर और स्थान पर शत्रु पर घातक आक्रमण करने में सफल होता है। जन समुदाय में रोगों का निरोध जनता के सामूहिक प्रयास से ही संभव है। युद्ध काल में सभी वर्गों के मनुष्यों को उत्साहपूर्ण सहयोग देकर प्रत्यक्ष या अप्रत्याक्ष रूप से युद्ध कार्य करना पड़ता है। सभी सैनिक तथा असैनिक व्यक्तियों के सक्रिय सहयोग के बिना सेनापति कुछ नहीं कर सकता। इसी प्रकार रोगों पर विजय प्राप्त करने के लिये महामारी-विज्ञान-वेत्ता को सभी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होना आवश्यक है। जनता में व्याप्त रोग संबंधी जानकारी के अतिरिक्त महामारीवेत्ता को आवश्यक वैधानिक अधिकार मिलने चाहिए। रोग के विरुद्ध यह युद्ध सृष्टि के आदि काल से चलता आया है और निरंतर बना रहेगा। इसमें कभी युद्ध-विराम तथा शांति की संभावना नहीं है। जीवन ही संधर्षमय है, इसलिये जीवनसंग्राम से पराङ्मुख होना आत्मघात है। रोगान्मूलन द्वारा मानव जीवन को सुखी बनाना ही सर्वोच्च सेवाधर्म है।

जैविक आपदा एवं उनका प्रबंधन- जैविक आपदा के प्रबंधन में निम्नांकित क्रियाएँ किया जाना चाहिए।

1. **सामान्य समझदारी का प्रयोग करें-** किसी घोषित जैविक आपातकाल के समय, यदि परिवार का कोई सदस्य बीमार हो जाता है तो संदेह करना महत्वपूर्ण होता है। स्वतः ही माने नहीं, हालाँकि, आपको अस्पताल के आपातकालीन चिकित्सा कक्ष में जाना चाहिये या कोई बीमारी जैविक हमले का परिणाम है। कई सामान्य बीमारियों के लक्षणों में समानता हो सकती है। सामान्य समझदारी, अच्छी व्यक्तिगत स्वच्छता और सफाई को अपनायें जिससे रोगाणुओं का प्रसार रूक सके, और चिकित्सीय सलाह लें। स्वस्थ रहें। अच्छी तरह भोजन करें। खूब आराम

करें। यह निर्धारित करने के लिये कि क्या तुरंत खतरा है, सामान्य समझदारी का प्रयोग करें। साबुन और पानी से अपने हाथों को बार-बार धोयें। किसी घोषित जैविक आपातकाल या विकसित होती महामारी में भीड़ से दूर रहने के कारण हो सकते हैं जहाँ दूसरे लोग संक्रमित हो सकते हैं। ऐसे समय भी हो सकते हैं जब आपको चेहरे के मास्क को पहनना पड़ सकता है जिससे यदि आप बीमार हैं तो रोगणुओं का फैलना कम हो जायेगा, या यदि आपके आसपास के लोग बीमार हैं तो संक्रामक रोगणुओं के संपर्क में आने से बचा जा सकता है। जैविक हमले की दशा में, जन स्वास्थ्य अधिकारी शायद आपको यह जानकारी तुरंत उपलब्ध न करा पायें कि आपको क्या करना चाहिये। यह निर्धारित करने में समय लगेगा कि वास्तव में बीमारी क्या है, इसका उपचार कैसे किया जाना चाहिए और खतरे में कौन है। फिर भी, आपको टी.वी. देखना चाहिये, रेडियो सुनना चाहिये, या आधिकारिक समाचारों के लिये इंटरनेट पर देखना चाहिये, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- क्या आप ऐसे समूह या क्षेत्र में हैं जिसको अधिकारी खतरे में मानते हैं?
- बीमारी के संकेत और लक्षण क्या हैं?
- क्या दवाईयाँ या टीके वितरित किये जा रहे हैं? कहाँ? उन्हें किसको लेना चाहिये?
- यदि आप बीमार हो जाते हैं तो आपातकालीन चिकित्सीय देखभाल कहाँ से पानी चाहिये?

2. **एक घोषित जैविक आपदा के आपातकाल के दौरान:** - यदि कोई परिवार का सदस्य बीमार हो जाता है, तो यह महत्वपूर्ण है कि संदेह करें। माने नहीं, हालाँकि, आपको अस्पताल के आपातकालीन चिकित्सा कक्ष में जाना चाहिये या कोई बीमारी जैविक हमले का परिणाम है। कई सामान्य बीमारियों के लक्षणों में समानता हो सकती है। सामान्य जानकारी, अच्छी व्यक्तिगत स्वच्छता और सफाई को अपनायें जिससे रोगणुओं का प्रसार रूक सके, और चिकित्सीय सलाह लें। विचार करें कि क्या आप उस समूह या क्षेत्र में हैं जिसे अधिकारी खतरे में समझते हैं। यदि आपके लक्षण बताये गये लक्षणों से मेल खाते हैं और आप उस समूह में हैं जो खतरे में माना गया है, तो तुरंत आपातकालीन चिकित्सीय ध्यान को आकर्षित करें।

3. यदि जैविक आपदा अच्छी तरह से सामने आ चुके हैं:-

- चिकित्सकों और जन स्वास्थ्य अधिकारियों के निर्देशों का पालन करें।
- यदि बीमारी संक्रामक है तो चिकित्सीय जाँच और उपचार पाने की अपेक्षा करें। आपको दूसरे लोगों से दूर रहने के लिये कहा जा सकता है या फिर विशेष रूप से अलग रखा जा सकता है।
- असंक्रामक बीमारी के लिये, चिकित्सीय जाँच और उपचार पाने की अपेक्षा करें।

4. यदि आपको आसपास किसी अस्वाभाविक और संदेहास्पद पदार्थ का पता चलता है तो:

- तुरंत दूर हट जायें।
- अपना बचाव करो। अपने मुँह और नाक को कपड़े की तहों से ढंक लें जिससे हवा छन सके पर साँस जा सके। उदाहरण के लिये, सूती कपड़े की दो-तीन तहें जैसे कि टी-शर्ट, रूमाल या तौलिया। अन्यथा, टिश्यू पेपर की कई तहें या कागज के तौलिये की कई तहें भी मदद कर सकती हैं।
- साबुन और पानी से धोयें।
- अधिकारियों से संपर्क करें।
- टी.वी. देखें, रेडियो सुनें, या आधिकारिक समाचारों और जानकारियों के लिये इंटरनेट पर देखें जिसमें शामिल हैं कि बीमारी के संकेत और लक्षण क्या हैं, क्या दवाईयाँ या टीके वितरित किये जा रहे हैं और यदि आप बीमार हो जाते हैं तो आपातकालीन चिकित्सीय देखभाल कहाँ से पानी चाहिये।
- यदि आप बीमार हो जाते हैं तो आपातकालीन चिकित्सीय देखभाल को आकर्षित करें।

5. जैविक विषाणु से अपना बचाव करें -

- यदि आपको आसपास किसी अस्वाभाविक और संदेहास्पद पदार्थ का पता लगता है तो अपना बचाव करने में कोई तकलीफ नहीं है। अपने नाक, मुँह, आँखों और त्वचा में कट के बचाव के लिये उपलब्ध कराने के लिये तैयार रहें।

- अपने मुँह और नाक को कपड़े की तहों से ढंक लें जिससे हवा छन सके पर साँस जा सके। उदाहरण के लिये, सूती कपड़े के दो-तीन तहें जैसे कि टी-शर्ट, रूमाल या तौलिया। अन्यथा, टिशू पेपर की कई तहें या कागज के तौलिये की कई तहें भी मदद कर सकती हैं।
- अपने नाक, मुँह, आँखों और त्वचा में कट के बचाव में सुधार के लिये जो भी आपके हाथ में हो उसे उपलब्ध कराने के लिये तैयार रहें। कोई भी चीज जो आपकी नाक और मुँह पर अच्छी प्रकार फिट हो सकती हो, जिसमें गाढ़ा बुना हुआ कपड़ा आपातकाल में मिलावटों को छानने में मदद कर सकता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि जिस हवा में आप साँस लेते हैं, वह अधिकाँश मास्क या कपड़े में से होकर आये न कि इसके चारों ओर से।
- बच्चों के लिये जो भी सबसे अच्छी तरह संभव हो उसे फिट करें। हार्डवेयर स्टोर्स में विभिन्न प्रकार के चेहरे के मास्क भी उपलब्ध हैं जिनकी दर इस बात पर तय की जाती है कि किसी औद्योगिक सैटिंग में वे कितने बारीक कण को छान सकते हैं। कपड़े का साधारण मास्क हवा में मिले हुये कुछ "बेकार" या रोगाणुओं को छान सकता है जो साँस के साथ आपके शरीर में जा सकते हैं, परंतु संभवतः आपका रासायनिक गैसों से आपका बचाव नहीं करेगा। फिर भी, आपकी नाक और मुँह के ऊपर आपातकाल में कुछ भी न होने से कुछ भी होना बेहतर है।

6. **लक्षण** – 1. यदि परिवार के किसी सदस्य में नीचे दिये गये लक्षणों में से कोई भी लक्षण विकसित होता है, तो उनको संभवतः और सदस्यों से अलग रखें, अच्छी स्वच्छता और सफाई बनाकर रखें जिससे रोगाणुओं का फैलना रूक सके और चिकित्सीय सलाह लें। **लक्षण-** 100 डिग्री से अधिक का तापमान, मितली या वमन, पेट में दर्द, डायरिया, पीला या बहा हुआ सा चेहरा, सरदर्द, खाँसी, कान में दर्द, नाक से गाढ़ा बहाव, खराब गला, त्वचा पर चकत्ते या संक्रमण, लाल या गुलाबी आँखें, भूख में कमी, ऊर्जा में हानि या गतिविधियों में कमी,
7. **स्वच्छता-** यदि कोई बीमार है, तो आप अच्छी व्यक्तिगत स्वच्छता और सफाई को अपनायें जिससे रोगाणुओं का प्रसार रूक सके। साबुन और पानी से अपने हाथों को बार-बार धोयें। भोजन और बर्तनों को साझा न करें। खाँसते या छींकते वक्त अपने मुँह और नाक को ढँक लें। बीमार

व्यक्ति को मास्क पहनाने पर विचार करें जिससे रोगाणुओं का प्रसार रूक सके। स्वास्थ्य संबंधी जानकारी को दूसरे लोगों के साथ साझा करने की योजना बनायें, विशेषकर उनके साथ जिनको स्थिति को समझने और उठाये जाने वाले विशिष्ट कदमों के बारे में मदद की जरूरत है।

8. **नाक और मुँह का बचाव** - चेहरे के मास्क या गाढ़ा बुना हुआ सूती कपड़ा जो आपकी नाक और मुँह को अच्छी प्रकार से ढँक लेता है और परिवार के हर सदस्य के लिये विशेष रूप से फिट हो। बच्चों के लिये जो भी सबसे अच्छी तरह संभव हो उसे फिट करें। अपने नाक, मुँह, आँखों और त्वचा में कट के बचाव के लिये आपके हाथ में जो कुछ भी हो उसे उपलब्ध कराने के लिये तैयार रहें। कोई भी चीज जो आपकी नाक और मुँह पर अच्छी प्रकार फिट हो सकती हो, जिसमें गाढ़ा बुना हुआ कपड़ा आपातकाल में मिलावटों को छानने में मदद कर सकता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि जिस हवा में आप साँस लेते हैं, वह अधिकाँश मास्क या कपड़े में से होकर आये न कि इसके चारों ओर से।

वर्तमान समय का महामारी (कोरोना वायरस)- कोरोना वायरस विश्वमारी (2019–20) की शुरुआत एक नए किस्म के कोरोनावायरस (2019-nCoV) के संक्रमण के रूप में मध्य चीन के वुहान शहर में 2019 के मध्य दिसंबर में हुई। बहुत से लोगों को बिना किसी कारण निमोनिया होने लगा और यह देखा गया की पीड़ित लोगों में से अधिकतर लोग वुहान सी फूड मार्केट में मछलियाँ बेचते हैं तथा जीवित पशुओं का भी व्यापार करते हैं। चीनी वैज्ञानिकों ने बाद में कोरोनावायरस की एक नई नस्ल की पहचान की जिसे 2019-nCoV प्रारंभिक पदनाम दिया गया। इस नए वायरस में कम से कम 70 प्रतिशत वही जीनोम अनुक्रम पाए गए जो सार्स-कोरोनावायरस में पाए जाते हैं। संक्रमण का पता लगाने के लिए एक विशिष्ट नैदानिक पीसीआर परीक्षण के विकास के साथ कई मामलों की पुष्टि उन लोगों में हुई जो सीधे बाजार से जुड़े हुए थे और उन लोगों में भी इस वायरस का पता लगा जो सीधे उस मार्केट से नहीं जुड़े हुए थे। पहले यह स्पष्ट नहीं था कि यह वायरस सार्स जितनी ही गंभीरता या घातकता का है अथवा नहीं।

20 जनवरी 2020 को चीनी प्रीमियर ली केकियांग ने नावेल कोरोनावायरस के कारण फैलने वाली निमोनिया महामारी को रोकने और नियंत्रित करने के लिए निर्णायक और प्रभावी प्रयास करने का आग्रह किया। 14 मार्च 2020 तक दुनिया में इससे 5,800 मौतें हो चुकी हैं। इस वायरस के पूरे चीन में, और मानव-से-मानव संचरण के प्रमाण हैं। 9 फरवरी तक व्यापक परीक्षण में 88,000 से अधिक पुष्ट मामलों का खुलासा हुआ था, जिनमें से कुछ स्वास्थ्यकर्मी भी हैं। मार्च 2020 तक थाईलैंड, दक्षिण

कोरिया, जापान, ताइवान, मकाऊ, हांगकांग, संयुक्त राज्य अमेरिका, सिंगापुर, वियतनाम, भारत, ईरान, इराक, इटली, कतर, दुबई, कुवैत और अन्य 160 देशों में पुष्टि के मामले सामने आए हैं।

23 जनवरी 2020 को, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्रकोप को अंतरराष्ट्रीय चिंता का एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित करने के खिलाफ फैसला किया। डब्ल्यूएचओ ने पहले चेतावनी दी थी कि एक व्यापक प्रकोप संभव था, और चीनी नव वर्ष के आसपास चीन के चरम यात्रा सीजन के दौरान आगे संचरण की चिंताएं थीं। अतः नए साल की जलसे को इस बीमारी के संचरण के डर से बंद कर दिया गया है, जिसमें बीजिंग में निषिद्ध शहर, पारंपरिक मंदिर मेलों और अन्य उत्सव समारोह शामिल हैं। रोग की घटनाओं में अचानक वृद्धि ने इसके उद्गम, वन्यजीव व्यापार, वायरस के प्रसार और नुकसान पहुंचाने की क्षमता के बारे में अनिश्चितताओं से संबंधित प्रश्न उठाए हैं, क्या यह वायरस पहले से अधिक समय से घूम रहा है? और इसकी संभावना प्रकोप एक सुपर स्प्रेडर घटना है?

कोरोना के शुरुवात में चीन की पहल- पहले संदिग्ध मामलों को 31 दिसंबर 2019 को WHO को सूचित किया गया था, रोगसूचक बीमारी के पहले उदाहरणों के साथ 8 दिसंबर 2019 को केवल तीन सप्ताह पहले दिखाई दिया था। 1 जनवरी 2020 को बाजार बंद कर दिया गया था, और जिन लोगों में कोरोनावायरस संक्रमण के संकेत और लक्षण दिखाई दिए, उन्हें अलग कर दिया गया था। संभावित रूप से संक्रमित व्यक्तियों के साथ संपर्क में आने वाले 400 से अधिक स्वास्थ्य कर्मचारियों सहित 700 से अधिक लोगों की शुरुआत में निगरानी की गई थी। संक्रमण का पता लगाने के लिए एक विशिष्ट नैदानिक पीसीआर परीक्षण के विकास के बाद, मूल वुहान संकुल में 41 लोगों में बाद में 2019-nCoV की उपस्थिति की पुष्टि की गई, जिनमें से दो को बाद में एक विवाहित जोड़े होने की सूचना दी गई थी। जिनमें से एक बाजार में मौजूद नहीं था, और एक अन्य तीन जो एक ही परिवार के सदस्य थे, जो बाजार के समुद्री खाने की दुकानों पर काम करते थे। कोरोनावायरस संक्रमण से पहली पुष्टि की गई मौत 9 जनवरी 2020 को हुई।

23 जनवरी 2020 को, वुहान को अलग रखा गया था, जिसमें वुहान के अंदर और बाहर सभी सार्वजनिक परिवहन को निलंबित कर दिया गया था। 24 जनवरी से आस-पास के शहर हुआंगगांग, इझोउ, चबी, जिंगझोउ और झीझियांग को भी अलग में रखा गया था। 30 जनवरी 2020 को विश्व

स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोना वायरस के प्रसार को अंतर्राष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया गया, इस प्रकार का आपातकाल डब्ल्यूएचओ द्वारा 2009 के एच वन एन वन के बाद छठा आपातकाल है।

कोरोना वायरस क्या है? - कोरोना वायरस (सीओवी) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है। इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर में सबसे पहले चीन में पकड़ में आया था। कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के ज़रिए फैलते हैं। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक लगभग दुनिया के सभी देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की ज़रूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

- क्या हैं इस बीमारी के लक्षण? - कोवाइड-19 / कोरोना वायरस में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ़्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज़्यादा परेशानी, किडनी फ़ेल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू में के वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते हैं।
- कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब? - इस समय कोरोना वायरस का कोई इलाज नहीं है लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाइयां दी जा सकती हैं। जब तक आप ठीक न हो जाएं, तब तक आप दूसरों से अलग रहें। कोरोना वायरस के इलाज के लिए वैक्सीन विकसित करने पर काम चल रहा है।

- क्या हैं इससे बचाव के उपाय? - स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए। अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खांसते और छींकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिशू पेपर से ढंककर रखें। जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें। अंडे और मांस के सेवन से बचें। जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।
- मास्क कौन और कैसे पहनें? - अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की जरूरत नहीं है। अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं, तो आपको मास्क पहनना होगा। जिन लोगों को बुखार, कफ या सांस में तकलीफ की शिकायत है, उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए।
- मास्क पहनने का तरीका :- मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए। अगर हाथ लग जाए तो तुरंत हाथ धोना चाहिए। मास्क को ऐसे पहनना चाहिए कि आपकी नाक, मुंह और दाढ़ी का हिस्सा उससे ढंका रहे। मास्क उतारते वक्त भी मास्क की लास्टिक या फीता पकड़कर निकालना चाहिए, मास्क नहीं छूना चाहिए। हर रोज मास्क बदल दिया जाना चाहिए।
- कोरोना का खतरा कम कैसे करें - कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं। अपने हाथ अच्छी तरह धोएं। खांसते या छींकते वक्त अपना मुंह ढंक लें। हाथ साफ़ नहीं हो तो आंखों, नाक और मुंह को छूने बचें।
- कोरोना का संक्रमण फैलने से कैसे रोकें? - सार्वजनिक वाहन जैसे बस, ट्रेन, ऑटो या टैक्सी से यात्रा न करें। घर में मेहमान न बुलाएं। घर का सामान किसी और से मंगाएं। ऑफिस, स्कूल या सार्वजनिक जगहों पर न जाएं। अगर आप और भी लोगों के साथ रह रहे हैं, तो ज्यादा सतर्कता बरतें। अलग कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम को लगातार साफ़ करें। 14 दिनों तक ऐसा करते रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके। अगर आप संक्रमित इलाके से आए हैं या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में रहे हैं तो आपको अकेले रहने की सलाह दी जा सकती है। अतः घर पर रहें।

भारत में महामारी और उनका प्रबंधन- महामारियों के विरुद्ध भारत के ऐतिहासिक सघर्षों के बारे में आपको इसलिए जानना चाहिए क्योंकि यह कहानी उम्मीद की एक किरण देती ही है. साथ ही, कहा जाता है कि भविष्य की चाबी अतीत के हाथ में ही होती है इसलिए हो सकता है कि कोई पिछला सबक ही कोविड 19 के दौर में कहीं काम आ जाए. भारत में कोरोना- (Corona Virus) संक्रमण की वैश्विक महामारी (Pandemic) भारत सहित दुनिया के कई देशों को अपनी चपेट में ले चुकी है, लेकिन ऐसे समय में भारत में संक्रमण (Infection) से लड़ने की कोशिशों को दुनिया में सराहा जा रहा है. डब्ल्यूएचओ (WHO) भारत के कदमों की तारीफ कर चुका है, लेकिन यह पहली बार नहीं है. इससे पहले भी कुछ महामारियों के खिलाफ जंग लड़ने में भारत (India) कामयाब हो चुका है और उनका नामोनिशान तक मिटा सका है.

1. पोलियो : 20 साल में हुआ नामोनिशान खत्म- 13 जनवरी 2011, यह वो ऐतिहासिक तारीख थी, जब भारत पोलियो (Polio) के अभिशाप से मुक्त हो गया था. पोलियो के खिलाफ जंग छेड़ने के 20 सालों बाद यह उपलब्धि मिली थी. अस्त में, एनसीबीआई के मुताबिक 1988 में दुनिया भर से पोलियो के खात्मे का अभियान शुरू हुआ था. इस वायरस (Virus) के खिलाफ मुहिम में काफी बड़ी आबादी वाले देश भारत के सामने कई चुनौतियां थीं. पोलियो ड्रॉप्स के अभियान को आक्रामक तौर पर सालों तक चलाया गया. देश भर में करीब साढ़े छह लाख पोलियो बूथ बने और 23 लाख स्वास्थ्यकर्मियों व वॉलेंटियरों की फोर्स ने इस मुहिम में शिरकत की. नतीजा ये हुआ कि 2014 में आखिरकार डब्ल्यूएचओ को भारत को पोलियो मुक्त घोषित करना पड़ा.
2. कुष्ठ रोग : नाम नहीं, सिर्फ निशान हैं बाकी - भारत में कुष्ठ रोग सालों नहीं बल्कि सदियों से एक अभिशाप की तरह रहा था और इसके रोगियों को अमानवीय बर्ताव तक झेलना पड़ता था. बैक्टीरिया जनित इस रोग को छुआछूत का रोग माना जाता था इसलिए रोगी अकेला पड़ जाता था. बहरहाल, भारत ने इसके खिलाफ लंबी जंग लड़ी और तकरीबन जीत ली है.
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी संस्थाओं के सहयोग से भारत ने एनएलईपी यानी लेप्रसी के खिलाफ कार्यक्रम शुरू किया था. इस कार्यक्रम के तहत उठाए गए कदमों के बाद आंकड़े बदले. 1983 में

जहां प्रति 10 हजार की आबादी पर 57.8 रोगी पाए जाते थे, वहीं दिसंबर 2005 में 1 रोगी पाया गया. साल 2016 में यह आंकड़ा 0.66 रोगी का रह गया. एनसीबीआई के मुताबिक छत्तीसगढ़ और दादरा नागर हवेली को छोड़कर शेष भारत में कुष्ठ के ताजा मामले तकरीबन समाप्त हो चुके हैं. इस महामारी से लड़ने में एमआईपी टीकाकरण मुहिम की बड़ी भूमिका रही.

4. हैजा : क्या वाकई खत्म हो चुकी है ये महामारी?- साल 1817 में कलकत्ता में इस बीमारी के फैलने की घटना से पहले भी यह महामारी भारत में रही थी. इसके बाद 1960 के दशक तक इस महामारी के फैलने की घटनाओं की जिक्र मिलता है. मीडिया में आई एक रिपोर्ट कहती है कि 2007 में ओडिशा में इस महामारी का आखिरी मामला सामने आया था, जबकि एनसीबीआई के आंकड़ों के मुताबिक साल 2007 में कम से कम नौ राज्यों में हैजा के मामले थे. महाराष्ट्र में 231, गुजरात में 198 और पश्चिम बंगाल में 161 मामले सामने आए थे.

हालांकि अब हैजा के मामले तकरीबन खत्म हो चुके हैं लेकिन पश्चिम बंगाल समेत ज्यादा प्रभावित रहे राज्यों में अब भी प्रति हजार की आबादी पर दो मामलों तक की आशंका रहती है. एनसीबीआई की रिपोर्ट कहती है कि हैजा के आंकड़े करीब शून्य होने की एक वजह निगरानी, जांच और प्रयोगशालाओं के सपोर्ट का न होना भी रहा है.

5. प्लेग : लाखों जानें गंवाकर महामारी से मिली मुक्ति - 100 सालों से ज्यादा वक्त तक भारत को इस महामारी से जूझना पड़ा था. महामारी विशेषज्ञों गुप्ते, रामचंद्रन व मुतटकर के एक अध्ययन के मुताबिक भारत में 1031 ईसवी से प्लेग का संकट समय समय पर रहा. 1812 ई. में संक्रमण का दौर हो या 1895-96 का भयानक दौर, यह महामारी पूर्व से पश्चिम भारत को चपेट में ले चुकी थी.

1898 से 1908 के बीच इस महामारी के कारण 5 लाख मौतें हुई थीं. 1966 में भारत में प्लेग के आखिरी मामले दर्ज होना बताया गया था, लेकिन 1994 में एक बार महामारी फैली और देश भर में 876 केस सामने आए व 54 जानें गईं. फिर 1994 में भारत को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्लेगमुक्त देश घोषित किया. 1997 में फिर क्लीनिकल जांचों में यह दावा किया गया कि इस महामारी के लक्षण अब देश में नहीं हैं. लेकिन, इस रोग को लेकर समय समय पर निगरानी की ज़रूरत बताई जाती रही है.

6. चेचक : आउटब्रेक के तीन साल बाद खात्मा - भारत में पुरानी महामारियों में एक चेचक का नाम भी रहा है. जनवरी से मई 1974 के बीच 15 हजार से ज्यादा मरीजों की मौत हो गई थी. एशिया

और अफ्रीका के कई देशों में इस महामारी के खिलाफ मुहिम छेड़ी गई थी. उन पांच महीनों में भारत ने 61 हजार से ज्यादा रोगी होने के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन को रिपोर्ट दी थी. 1975 में दुनिया भर से इस महामारी को खत्म करने का कार्यक्रम टारगेट ज़ीरो के नाम से शुरू हुआ और 24 मई 1975 को भारत में इस महामारी के आखिरी मरीज़ की पहचान की गई. दो सालों की निगरानी और जांच के बाद 1977 में माना गया कि भारत से यह महामारी खत्म हो गई. फिर 1979 में दुनिया से इस महामारी के खत्म होने की पुष्टि की गई.

दो महामारियां, जिनके खिलाफ भारत में जारी है जंग - ड़ैकन्कुलस रुगणता से 1996 में छुटकारा पाया गया था. लेकिन अब भी, एचआईवी, डेंगू, टीबी जैसी संक्रामक महामारियों के अलावा दो महामारियां ऐसी हैं जो सदियों से भारत में हैं और इनके खिलाफ कार्यक्रम के बावजूद इनसे पूरी तरह छुटकारा अब तक नहीं मिला है.

1. मलेरिया : पिछले 15 सालों में भारत में इस रोग के मामले काफी कम हुए हैं. फिर भी डब्ल्यूएचओ कहता रहा है कि भारत में इस महामारी के मामले कम होने की वजह जांच तंत्र कमजोर होना है क्योंकि कुल मामलों के सिर्फ 8 फीसदी ही सामने आते हैं. हालांकि भारत सरकार ने 2022 तक मलेरिया के खात्मे के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाया है, लेकिन लक्ष्य पूरा न होने पर इसे और पांच साल यानी 2027 तक बढ़ाया जा सकेगा. वहीं कुछ अपुष्ट रिपोर्ट्स कह रही हैं कि मलेरिया का टीका खोज लिया गया है और परीक्षण जारी हैं.
2. खसरा : डब्ल्यूएचओ के 11 सदस्य देशों ने 2020 तक खसरा यानी मीज़ल्स या शीतला रोग से छुटकारा पाने का बीड़ा उठाया. भारत ने यह लक्ष्य हासिल करने के लिए दो खुराक का नियमित टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया. अगर कोविड 19 के चलते इस कार्यक्रम पर कोई भारी असर न पड़ा तो 2020 तक भारत यह लक्ष्य हासिल कर सकता है.

ध्यातव्य है कि देश भर में स्वास्थ्यकर्मियों के के विरुद्ध हो रही हिंसा में बढ़ोतरी को देखते हुए 22 अप्रैल, 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अपनी बैठक में महामारी रोग अधिनियम, 1897 में संशोधन को मंजूरी दी थी, ताकि महामारी के दौरान स्वास्थ्यकर्मियों और उनकी संपत्ति (आवास तथा कार्यस्थल) की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

उपसंहार : लगभग 18 साल पहले सार्स वायरस से भी ऐसा ही खतरा बना था। 2002-03 में सार्स की वजह से पूरी दुनिया में 700 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। पूरी दुनिया में हजारों लोग इससे संक्रमित

हुए थे। इसका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ा था। ऐसे ही वर्तमान में कोरोना कहर ढा रहा है। इस संक्रामक बीमारी से अब तक दुनिया में लाखों मौते हो चुकी हैं वही भारत में 16095 मौते हुई हैं जो चिंतनीय हैं। क्योंकि ये आकड़े रुकने का नाम नहीं ले रहा है। अतः मानव समाज को आज अपनी विकास के गति व दिशा पर सोचने की जरूरत है। क्योंकि ये जैविक आपदाएँ अधिकांश मनुष्य की क्रिया कलाप से ही जन्मी हैं। हमारे भारत जैसे विकासशील देश में महामारिया भ्यांकर कहर ढा सकती हैं क्योंकि हमारे सामने विकास गति को पकड़े रखने की चुनौती के साथ महामारी से लड़ना सहज नहीं रहेगा। कोरोना काल में ही यदि हम अपनी तैयारियों में देखे तो लॉकडाउन को प्रमुख हथियार मानकर काम किया है पर इस लॉकडाउन के चलते बेरोजगारी व अवसाद में हजारों दैनिक वेतनभोगी मजदूर मारे जा चुके हैं। और बहुत से मजदूर सड़कों पर हैं।

महामारी के इस दौर को मानव सभ्यता का अब तक के सबसे बड़े आपदा के रूप में माना जा रहा है, जो सही भी हो सकता है क्योंकि इस जैविक बीमारी के उत्पत्ति को आज 06 माह से अधिक होने को है और उनका रोकथाम हेतु उपयुक्त औषधि का उपचार कोई देश नहीं कर पाया है। अतः ऐसे महामारियों से संबंधित बीमारी में आपसी समझदारी सबसे अहम है। जिसे एक व्यक्ति ही स्वयं अपना सकता है।